ABSTRACT

विवाह संस्था के प्रति युवतियों का बदलता दृष्टिकोणः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. सोनल मेहरोत्रा
काशीपुर (उधम सिंह नगर) उत्तराखंड

सारांश

विवाह एक धार्मिक संस्कार है। हिन्दू जातियों और गैर हिन्दू समुदायों में भी विवाह को सामाजिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। विवाह को जीवन जीने की जरुरत के रूप में भी परिभाषित किया जा सकता है। समकालीन भारतीय समाज में विवाह ओर उससे जुड़े रीति-रिवाजों में निरंतर परिवर्तन दृष्टिगोचर है। विवाह सामाजिक व्यवस्था में सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों के नियमन के रुप में प्रचलित है। यह संस्था कई परिवर्तनों से गुजरी हुई अतार्किक ओर अनुपयोगी पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही मान्यताओं को अस्वीकार कर रही है। यह अब कई मान्यताओं में एक पक्षीय ना होकर द्विपक्षीय अर्थात् दोनों पक्षों को बदलती सोच के रूप में उजागर हो रही है। युवा पीढ़ी के मन-मस्तिष्क में रुढ़ीवादी मान्यताओं के प्रति और दोनों पक्ष एक समान मुद्दे के प्रति क्रांतिकारी परिवर्तन देखा जा रहा है। विवाह के संबंध में युवाओं के विचारों में भी परिवर्तन स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। अस्तित्व की लड़ाई लड़ते हुए प्रत्येक युवती अपने और अपने परिवार के विचारों को महत्वपूर्ण मानकर विवाह संबंधित फैसला लेना चाहती है।

प्रस्तुत अध्ययन विवाह संबंधी युवतियों के विचारों में आने वाले परिवर्तन ओर उनकी विवाह से संबंधित आकांक्षाओं से संबंधित है। विवाह करने के लिए साथी का चुनाव करना हो, आर्थिक रुप से स्वच्छंदता की मांग हो या समाज में अपने सभी उत्तरदायित्व को निभाते हुए स्वयं के लिए कुछ करने की मंशा से संबंधित विचार हो सभी पहलुओं में स्त्रियां अपनी भागीदारी समान रुप से चाहती हैं।

मुख्य शब्द- विवाह संस्था और परिवर्तन, भूमण्डलीयकरण, औद्योगीकरण, नगरीकरण, पश्चिमीकरण

समाज वैज्ञानिकी अक्टूबर-मार्च 2020-21
अंक-33-34, ISSN 0973-4201
भारतीय समाज विज्ञान परिषद्